7 शब्द-रूप
(संज्ञा, सर्वनाम तथा संख्यावाचक शब्दों के तीनों लिंगों के रूप)

संस्कृत व्याकरण की दृष्टि से शब्द दो प्रकार के माने जाते हैं— (१) अजन्त, (२) हलन्त।

जो शब्द अपने अन्त में स्वर रखते हैं, उन्हें अजन्त या स्वरान्त कहते हैं। **जैसे–** राम, कृष्ण, हरि, लता आदि।

जिन शब्दों के अन्त में व्यंजन होता है, उन्हें हलन्त या व्यंजनान्त कहते हैं। **जैसे–** दिश्, वाक्, सरित् आदि।

इन दोनों प्रकार के शब्दों में तीनों लिङ्ग के शब्द होते हैं। इस प्रकार सम्पूर्ण शब्दों को निम्नलिखित भागों में विभक्त किया जाता है–

(१) अजन्त पुंलिङ्ग, (२) हलन्त पुंलिङ्ग, (३) अजन्त स्त्रीलिङ्ग, (४) हलन्त स्त्रीलिङ्ग, (५) अजन्त नपुंसकलिङ्ग, (६) हलन्त नपुंसकलिङ्ग।

रूपों को स्मरण करने का सरल तरीका यह है कि पहले किसी एक शब्द को अच्छी तरह समझकर याद करना चाहिए। फिर नवीन शब्दों को बनाने के लिए यह देखना चाहिए कि शब्द का लिङ्ग क्या है और उसके अन्त में कौन-सा स्वर या व्यंजन है। फिर उसी लिङ्ग के उसी स्वर या व्यंजन को अन्त में रखने वाले शब्द के अनुसार उसका रूप बना लेना चाहिए। **जैसे–** बालक शब्द का तृतीया के 'एकवचन' का रूप ज्ञात करना है, तो 'बालक' शब्द पुंलिङ्ग है और उसके अन्त में अ है, अत: पुंलिङ्ग में 'अ' अन्त में रखनेवाले 'राम' का तृतीया एकवचन का रूप 'रामेण' को ध्यान में रखकर हमें बालक का 'बालकेन' रूप ज्ञात कर लेना चाहिए।

(अ) पुंलिङ्ग
राम (अकारान्त)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	राम:	रामौ	रामा:
द्वितीया	रामम्	रामौ	रामान्
तृतीया	रामेण	रामाभ्याम्	रामै:
चतुर्थी	रामाय	रामाभ्याम्	रामेभ्य:
पञ्चमी	रामात्	रामाभ्याम्	रामेभ्य:
षष्ठी	रामस्य	रामयो:	रामाणाम्
सप्तमी	रामे	रामयो:	रामेषु
सम्बोधन	हे राम!	हे रामौ!	हे रामा:!

नोट–बालक, छात्र, नृप, नर, पुत्र, मूषक, मातुल, गज, सर्प, कूप, तड़ाग, वृक्ष, चन्द्र, अश्व, वानर, सुर, देव, इन्द्र, गणेश, मयूर, सिंह, नाग, जन, जनक, खग, सुत, कर (हाथ), पाद (पैर) आदि शब्दों के रूप राम के समान ही होते हैं।

हरि (इकारान्त)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	हरिः	हरी	हरयः
द्वितीया	हरिम्	हरी	हरीन्
तृतीया	हरिणा	हरिभ्याम्	हरिभिः
चतुर्थी	हरये	हरिभ्याम्	हरिभ्यः
पञ्चमी	हरेः	हरिभ्याम्	हरिभ्यः
षष्ठी	हरेः	हर्योः	हरीणाम्
सप्तमी	हरौ	हर्योः	हरिषु
सम्बोधन	हे हरे!	हे हरी!	हे हरयः

नोट–कपि, मुनि, कवि, यति, ऋषि, निधि, रवि, अग्नि, मणि, जलधि, पयोधि, अरि, व्याधि, उदधि, गिरि आदि रूप हरि के समान ही होते हैं।

गुरु (उकारान्त)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	गुरुः	गुरू	गुरवः
द्वितीया	गुरुम्	गुरू	गुरून्
तृतीया	गुरुणा	गुरुभ्याम्	गुरुभिः
चतुर्थी	गुरवे	गुरुभ्याम्	गुरुभ्यः
पञ्चमी	गुरोः	गुरुभ्याम्	गुरुभ्यः
षष्ठी	गुरोः	गुर्वोः	गुरूणाम्
सप्तमी	गुरौ	गुर्वोः	गुरुषु
सम्बोधन	हे गुरो!	हे गुरू!	हे गुरवः!

नोट– रिपु, वायु, शिशु, भानु, राहु, विष्णु, विधु, साधु, ऋतु, शम्भु, जन्तु, तरु, बाहु, इन्दु, परशु आदि के रूप गुरु की तरह होते हैं।

रमा (लक्ष्मी) आकारान्त

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	रमा	रमे	रमाः
द्वितीया	रमाम्	रमे	रमाः
तृतीया	रमया	रमाभ्याम्	रमाभिः
चतुर्थी	रमायै	रमाभ्याम्	रमाभ्यः
पञ्चमी	रमायाः	रमाभ्याम्	रमाभ्यः
षष्ठी	रमायाः	रमयोः	रमाणाम्
सप्तमी	रमायाम्	रमयोः	रमासु
सम्बोधन	हे रमे!	हे रमे!	हे रमाः।

नोट– लता, माया, सीता, विद्या, शोभा, बालिका, माला, दया, कान्ता, कन्या, गंगा, बाला, राधा, चिन्ता, आज्ञा, कमला, छात्रा, शिवा, कोकिला, धरा, सुषमा, संध्या आदि के रूप रमा की तरह ही होते हैं।

मति (बुद्धि) इकारान्त

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	मतिः	मती	मतयः
द्वितीया	मतिम्	मती	मतीः
तृतीया	मत्या	मतिभ्याम्	मतिभिः
चतुर्थी	मतये, मत्यै	मतिभ्याम्	मतिभ्यः
पञ्चमी	मत्याः, मतेः	मतिभ्याम्	मतिभ्यः
षष्ठी	मत्याः, मतेः	मत्योः	मतीनाम्
सप्तमी	मत्याम्	मत्योः	मतिषु
सम्बोधन	हे मते!	हे मती!	हे मतयः।

नोट– बुद्धि, यति, श्रुति, रात्रि, सम्पत्ति, विपत्ति, कान्ति, मुक्ति, उक्ति, भक्ति, आदि के रूप मति की तरह ही होते हैं।

वाच् (वाणी) चकारान्त

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	वाक् वाग्	वाचौ	वाचः
द्वितीया	वाचम्	वाचौ	वाचः
तृतीया	वाचा	वाग्भ्याम्	वाग्भिः
चतुर्थी	वाचे	वाग्भ्याम्	वाग्भ्यः
पञ्चमी	वाचः	वाग्भ्याम्	वाग्भ्यः
षष्ठी	वाचः	वाचोः	वाचाम्
सप्तमी	वाचि	वाचोः	वाक्षु
सम्बोधन	हे वाक्!	हे वाचौ!	हे वाचः।

नोट–ऋच्, त्वच्, रुच् (कान्ति), शुच् (शोक) आदि के रूप इसी तरह होते हैं।

(स) नपुंसकलिङ्ग

सर्व (सब)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सर्वम्	सर्वे	सर्वाणि
द्वितीया	सर्वम्	सर्वे	सर्वाणि
तृतीया	सर्वेण	सर्वाभ्याम्	सर्वैः
चतुर्थी	सर्वस्मै	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः
पञ्चमी	सर्वस्मात्	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः
षष्ठी	सर्वस्य	सर्वयोः	सर्वेषाम्
सप्तमी	सर्वस्मिन्	सर्वयोः	सर्वेषु

तद् (वह)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	तत्	ते	तानि
द्वितीया	तत्	ते	तानि
तृतीया	तेन्	ताभ्याम्	तैः
चतुर्थी	तस्मै	ताभ्याम्	तेभ्यः
पञ्चमी	तस्मात्	ताभ्याम्	तेभ्यः
षष्ठी	तस्य	तयोः	तेषाम्
सप्तमी	तस्मिन्	तयोः	तेषु

अस्मद् (मैं, हम)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	अहम्	आवाम्	वयम्
द्वितीया	माम्, मा	आवाम्, नौ	अस्मान्, नः
तृतीया	मया	आवाभ्याम्	अस्माभिः
चतुर्थी	मह्यम्, मे	आवाभ्याम्, नौ	अस्मभ्यम्, नः
पञ्चमी	मत्	आवाभ्याम्	अस्मत्
षष्ठी	मम, मे	आवयोः, नौ	अस्माकम्, नः
सप्तमी	मयि	आवयोः, नौ	अस्मासु

युष्मद् (तू, तुम)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	त्वम्	युवाम्	यूयम्
द्वितीया	त्वाम्, त्वा	युवाम्, वाम्	युष्मान्, वः
तृतीया	त्वया	युवाभ्याम्	युष्माभिः
चतुर्थी	तुभ्यम्, ते	युवाभ्याम्, वाय्	युष्मभ्यम्, वः
पञ्चमी	त्वत्	युवाभ्याम्	युष्मत्
षष्ठी	तव, ते	युवयोः, वाम्	युष्माकम्, वः
सप्तमी	त्वयि	युवयोः, वाम्	युष्मासु

संस्कृत के एक से १०० तक संख्यावाचक शब्द

१. एक (एकः, एका, एकम्)	८. अष्टन्	१५. पञ्चदशन्
२. द्वि (द्वौ, द्वे, द्वे)	९. नवन्	१६. षोडशन्
३. त्रि (त्रयः, त्रिस्रः, त्रीणि)	१०. दशन्	१७. सप्तदशन्
४. चतुर् (चत्वारः, चतस्रः, चत्वारि)	११. एकादशन्	१८. अष्टदशन्
५. पञ्चन्	१२. द्वादशन्	१९. नवदशन्
६. षट्	१३. त्रयोदशन्	(एकोनविंशति, ऊनविंशति,
७. सप्तन्	१४. चतुर्दशन्	एकान्नविंशति)

२०. विंशति
२१. एकविंशति
२२. द्वाविंशति
२३. त्रयोविंशति
२४. चतुर्विंशति
२५. पञ्चविंशति
२६. षड्विंशति
२७. सप्तविंशति
२८. अष्टाविंशति
२९. नवविंशति (एकोनत्रिंशत्, ऊनत्रिंशत्, एकान्नत्रिंशत्)
३०. त्रिंशत्
३१. एकत्रिंशत्
३२. द्वात्रिंशत्
३३. त्रयस्त्रिंशत्
३४. चतुस्त्रिंशत्
३५. पञ्चत्रिंशत्
३६. षट्त्रिंशत्
३७. सप्तत्रिंशत्
३८. अष्टात्रिंशत्
३९. नवत्रिंशत्
४०. चत्वारिंशत्
४१. एकचत्वारिंशत्
४२. द्विचत्वारिंशत्
४३. त्रिचत्वारिंशत् (द्वाचत्वारिंशत्)
४४. चतुश्चत्वारिंशत्
४५. पञ्चचत्वारिंशत्
४६. षट्चत्वारिंशत्
४७. सप्तचत्वारिंशत्
४८. अष्टचत्वारिंशत्
४९. नवचत्वारिंशत् (ऊनपञ्चाशत्, एकोनपञ्चाशत्)
५०. पञ्चाशत्
५१. एकपञ्चाशत्
५२. द्विपञ्चाशत् (द्वापञ्चाशत्)
५३. त्रिपञ्चाशत् (त्रय:पञ्चाशत्)
५४. चतु:पञ्चाशत्
५५. पञ्चपञ्चाशत्
५६. षट्पञ्चाशत्
५७. सप्तपञ्चाशत्
५८. अष्टापञ्चाशत् (अष्टपञ्चाशत्)
५९. नवपञ्चाशत् (ऊनषष्टि, एकोनषष्टि, एकान्नषष्टि)
६०. षष्टि
६१. एकषष्टि
६२. द्विषष्टि (द्वाषष्टि)
६३. त्रिषष्टि (त्रय:षष्टि)
६४. चतुष्षष्टि
६५. पञ्चषष्टि
६६. षट्षष्टि
६७. सप्तषष्टि
६८. अष्टषष्टि (अष्टाषष्टि)
६९. नवषष्टि (ऊनसप्तति, एकोनसप्तति, एकान्नसप्तति)
७०. सप्तति
७१. एकसप्तति
७२. द्विसप्तति (द्वासप्तति)
७३. त्रिसप्तति (त्रयस्सप्तति)
७४. चतुस्सप्तति
७५. पञ्चसप्तति
७६. षट्सप्तति
७७. सप्तसप्तति
७८. अष्टसप्तति (अष्टासप्तति)
७९. नवसप्तति (ऊनाशीति, एकोनाशीति, एकान्नाशीति)
८०. अशीति
८१. एकाशीति
८२. द्वयशीति
८३. त्र्यशीति
८४. चतुरशीति
८५. पञ्चाशीति
८६. षडशीति
८७. सप्ताशीति
८८. अष्टाशीति
८९. नवाशीति (ऊननवति, एकोननवति, एकान्ननवति)
९०. नवति
९१. एकनवति
९२. द्विनवति (द्वानवति)
९३. त्रिनवति (त्रयोनवति)
९४. चतुर्नवति
९५. पञ्चनवति
९६. षण्णवति
९७. सप्तनवति
९८. अष्टनवति (अष्टानवति)
९९. नवनवति (एकोनशत)
१००. शत।

सौ से अधिक कोटि (करोड़) तक संख्यावाची शब्द

१००	—	शत (सौ)	१,००,०००	—	लक्ष (लाख)
१,०००	—	सहस्र (हजार)	१०,००,०००	—	प्रयुत (दस लाख)
१०,०००	—	अयुत (दस हजार)	१,००,००,०००	—	कोटि (करोड़)

अभ्यास-प्रश्न

(क) १. निम्नलिखित में से किसी एक का रूप लिखिए–

(अ) 'राम' शब्द का तृतीया विभक्ति का एकवचन, बहुवचन तथा सप्तमी विभक्ति का एकवचन, द्विवचन।

(आ) 'मति' शब्द का चतुर्थी विभक्ति का द्विवचन, बहुवचन तथा षष्ठी विभक्ति का एकवचन, बहुवचन।

(इ) 'वाच' शब्द का द्वितीया विभक्ति का द्विवचन, बहुवचन तथा पञ्चमी विभक्ति का एकवचन, द्विवचन।

२. निम्नलिखित में से किसी एक का शब्द-रूप लिखिए–

(अ) सर्व (पुं०) शब्द के तृतीया विभक्ति के सभी वचनों में।

(आ) मति शब्द के पञ्चमी एकवचन तथा द्वितीया बहुवचन में।

(इ) गुरु शब्द के चतुर्थी एकवचन में।

३. निम्नलिखित में से किसी एक का रूप लिखिए–

(अ) गुरु शब्द के चतुर्थी विभक्ति के सभी वचनों का रूप।

(आ) रमा शब्द के द्वितीया विभक्ति एकवचन व सप्तमी द्विवचन के रूप।

(इ) युष्मत् शब्द के तृतीया विभक्ति के तीनों वचनों व षष्ठी एकवचन का रूप।

४. निम्नलिखित शब्दों के पञ्चमी विभक्ति के तीनों वचन में रूप लिखिए–

रमा, वाच, इदम्, युष्मद्, हरि, गुरु।

५. निम्नलिखित में से किसी एक का शब्द-रूप लिखिए–

(अ) 'रमा' शब्द के पञ्चमी और षष्ठी विभक्तियों के तीनों वचनों में।

(आ) 'युष्मद्' शब्द के द्वितीया द्विवचन तथा चतुर्थी बहुवचन में।

६. निम्नलिखित में से किसी एक का रूप लिखिए–

(अ) तद् (पुंलिङ्ग) का तृतीया एवं चतुर्थी विभक्ति के एकवचन तथा बहुवचन में।

(आ) 'मति' का द्वितीया विभक्ति के सभी वचनों तथा तृतीया विभक्ति के एकवचन में।

(इ) गुरु (पुं०) का चतुर्थी के एकवचन तथा पञ्चमी विभक्ति के सभी वचनों में।

७. निम्नलिखित में से किसी एक का रूप लिखिए–

(अ) 'राम' के तृतीया विभक्ति तथा पञ्चमी विभक्ति के द्विवचन व बहुवचन।

(आ) 'रमा' के चतुर्थी विभक्ति तथा षष्ठी विभक्ति के एकवचन व द्विवचन।

(इ) 'वाच्' शब्द का द्वितीया तथा सप्तमी के द्विवचन व बहुवचन।

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों के सही विकल्प चुनिए–

१. 'मत्याः' रूप किस विभक्ति व वचन का है?

(अ) तृतीया विभक्ति बहुवचन **(ब)** पञ्चमी विभक्ति एकवचन

(स) सप्तमी विभक्ति बहुवचन **(द)** द्वितीया विभक्ति द्विवचन।

२. 'रमायै' रूप है नदी शब्द का–

(अ) तृतीया एकवचन **(ब)** द्वितीया एकवचन

(स) चतुर्थी एकवचन **(द)** षष्ठी एकवचन

३. 'सर्वस्य' रूप किस विभक्ति व वचन का रूप है?

(अ) द्वितीया विभक्ति बहुवचन **(ब)** षष्ठी, सप्तमी के द्विवचन

(स) पञ्चमी एकवचन **(द)** प्रथमा द्विवचन

४. गुरवे किस विभक्ति एवं वचन का रूप है?

(अ) द्वितीया विभक्ति एकवचन **(ब)** चतुर्थी विभक्ति एकवचन

(स) षष्ठी विभक्ति एकवचन **(द)** सप्तमी विभक्ति एकवचन

५. तत् सर्वनाम तस्मिन् रूप किस विभक्ति में बनता है?

(अ) पञ्चमी **(ब)** चतुर्थी

(स) षष्ठी **(द)** सप्तमी

६. 'मया' रूप किस विभक्ति का है?

(अ) तृतीया **(ब)** चतुर्थी **(स)** पञ्चमी **(द)** षष्ठी

७. सर्व शब्द का 'सर्वस्मै' रूप किस विभक्ति में बनता है?

(अ) तृतीया में **(ब)** चतुर्थी में **(स)** पञ्चमी में **(द)** षष्ठी में

८. 'अस्मत्' किस विभक्ति व वचन का रूप है?

(अ) चतुर्थी विभक्ति बहुवचन **(ब)** पञ्चमी विभक्ति एकवचन

(स) षष्ठी विभक्ति एकवचन **(द)** सप्तमी विभक्ति द्विवचन

९. गुरु शब्द का गुरोः रूप किस विभक्ति में बनता है?

(अ) द्वितीया में **(ब)** चतुर्थी में **(स)** षष्ठी में **(द)** पञ्चमी में

१०. 'रमाभ्याम्' किन-किन विभक्तियों के किस वचन का है?

११. तस्मात् किस विभक्ति व वचन का रूप है?

(अ) द्वितीया विभक्ति **(ब)** सप्तमी विभक्ति का एकवचन

(स) द्वितीया विभक्ति, बहुवचन **(द)** तृतीया विभक्ति, एकवचन

१२. त्वत् किस विभक्ति व वचन का रूप है?

(अ) पञ्चमी विभक्ति, बहुवचन **(ब)** द्वितीया विभक्ति, एकवचन

(स) पञ्चमी विभक्ति, एकवचन **(द)** प्रथमा विभक्ति, एकवचन

१३. तद् शब्द (पुंलिंग) के चतुर्थी विभक्ति एक वचन का क्या रूप है?

(अ) तस्मै **(ब)** तस्यै **(स)** तयोः **(द)** तेषाम्

१४. मत्योः रूप किस विभक्ति के किस वचन का है?

१५. मति शब्द का पञ्चमी एकवचन का रूप है–

(अ) मत्यै **(ब)** मत्या **(स)** मतेः **(द)** मत्याम्

●●●